28 अप्रैल, 2017 को अम्बलप्पुझा (केरल) में 34वें अखिल भारत श्रीमद्भागवत महासत्रम 2017 के उद्घाटन के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण।

वेदीयील इरिकुन्नः विशिष्ट व्यक्तिकले, केरलीयराया एन्डे एल्ला सहोदरी–सहोदरन्मारे, दैवतिंडे सोन्दम नाडाया इविडे वन्नु निंगलोड संसारीक्कान अवसरम् लभिच्छतु भाग्यमायि न्यान् करूतुन्नु!

God's Own Country केरल में आप सबके समक्ष अखिल भारत श्रीमद्भागवत महासत्रम 2017 के सुअवसर पर उपस्थित होकर मुझे अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है।

1. मेरे लिए यह सम्मान और गौरव की बात है कि मुझे 28 अप्रैल से 07 मई, 2017 तक अम्बलप्पुझा में आयोजित किए जा रहे 34वें अखिल भारत श्रीमदभागवत महासत्रम, 2017 का उद्घाटन के लिए आमंत्रित किया गया है। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में बड़ी संख्या में यहां उपस्थित जनसमूह का अभिवादन करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस विशाल आध्यात्मिक आयोजन में भाग लेने के लिए मुझे आमंत्रित करने के लिए मैं इस कार्यक्रम के आयोजकों, विशेष रूप से सत्रम समिति के अध्यक्ष श्री बाबू पनिक्कर जी को धन्यवाद देती हूं। Normally Shrimad Bhagwat Katha is a 7 days long Anushthan (a religious commitment), but The Satram to be organised here in the holy city of Ambalapuzha

will of ten days i.e. from 28 April to 7th May 2017. I am fortunate enough to be a part of this holy and august gathering.

2. I am also excited to know about the grand history of this age old historical City Ambalapuzha, which is also known as Dwarka of South. श्री कृष्ण मंदिर और मंदिर से जुड़ी अनेक जनश्रुतियों तथा श्रद्धालुओं को दिए जाने वाले प्रसादम् (आशीर्वाद के रूप में आराध्य देव का भोग) अम्बलप्पुझा पलपयसम (दूध की खीर) के लिए प्रसिद्ध यह पवित्र और पौराणिक शहर है।

3. आज मैं भी इस महान आध्यात्मिक आयोजन 34वें अखिल भारत श्रीमदभागवत महासत्रम में एक श्रद्धालु के रूप में आई हूं। इस महासत्रम को दक्षिण भारत में सबसे बड़ा वार्षिक आध्यात्मिक समागम माना जाता है। इस प्रकार के आध्यात्मिक आयोजन में देश के अलग–अलग भागों से बड़ी संख्या में लोग प्रतिष्ठित विद्वानों और व्याख्याताओं के प्रवचनों और व्याख्यानों को सुनने के लिए आते हैं। श्रीमद्भागवत में निहित उपदेशों को आत्मसात् करने और इस पवित्र ग्रंथ में उल्लिखित महान आदर्शों, मूल्यों और दृष्टिकोण का श्रवण करके सांसारिक बाधाओं से मन को मुक्त करने के लिए यहां उपस्थित होना सौभाग्य का विषय है।

4. पवित्र ग्रंथ श्रीमद्भागवतम् हमारी समसामयिक परंपराओं में व्याप्त है और इसकी कथाओं को नियमित रूप से लोक और शास्त्रीय नृत्य और संगीत तथा रंगमंच के माध्यम से दर्शाया जाता है।

5. पवित्र ग्रंथ श्रीमदभागवतम् अनेक महत्वपूर्ण भारतीय भक्ति परंपराओं की धार्मिक विधियों का आधार है। इसका कथानक पूरी तरह सुगठित है और इसकी भाषा तथा संगीतमय अभिव्यक्ति संस्कृत के श्रेष्ठतम कवित्व के समान है। इसके साथ ही श्रीमद्भागवतम् का आध्यात्मिक संदेश कृष्ण अथवा विष्णु की भक्ति के प्रति पूर्णतः समर्पित है जो कि वेदांत और सांख्य की शास्त्रीय परंपराओं का आधार है।

6. वैदिक ज्ञान के सम्यक् परिणाम के रूप में वर्णित श्रीमदभागवतम् के उपदेश देश काल से परे हैं। ये नैतिकता अथवा न्याय की स्पष्ट अवधारणाओं का अनुसमर्थन किए बिना धर्म की व्याख्या करते हैं और हमें यह सीख देते हैं कि ''धर्म'' की एकमात्र कसौटी भक्ति ही है। जब हमारे कार्य भक्ति से प्रेरित होते हैं और परमात्मा हमसे प्रसन्न होता है तब इसका परिणाम शुभ ही होता है।

7. मैं इसके एक श्लोक का उल्लेख करती हूं (8.9.29):

''यद् युज्यतेऽसुवसुकर्मनोवचोभि
र्देहात्मजादिशेष नृमिस्तदसत् पृथक्त्वात् ।
तैरेव सद् भवति यत् क्रियतेऽपृथक्त्वात्
सर्वस्य तद् भवति मूलनिषेचनं यत् ।।''

(मानव समाज में किसी के शब्दों, सोच और कृत्यों से अपनी सम्पत्ति और जान की रक्षा करने के लिए अनेक कार्य किए जाते हैं लेकिन ये सभी कार्य अपने व्यक्तिगत अथवा अपने शारीरिक या मानसिक सुख के लिए किए जाते हैं। भक्ति भाव के अभाव में ये सभी कार्य निष्फल हो जाते हैं। लेकिन जब ये सभी कार्य ईश्वर को समर्पित करके किए जाते हैं, तो इससे सभी का कल्याण होता है, जैसे किसी वृक्ष की जड़ को सींचने से पूरे वृक्ष को पानी मिल जाता है।)

8. आज से 7 मई 2017 तक निरंतर 10 दिनों तक प्रख्यात् विद्वानों एवं ऋषि–मुनियों द्वारा मंत्रों एवं उपदेशों का निरंतर पठन–पाठन होगा, जिससे सम्पूर्ण जगत एवं वातावरण में सकारात्मक शक्ति (Positive Energy) का संचार होगा। श्रीमद्भागवत कथा श्रवण से लौकिक व आध्यात्मिक विकास होता है। श्रीमद्भागवत की तुलना कल्पवृक्ष से की गई है, जो सच भी है। इसकी महिमा इस श्लोक से वर्णित है:–

''सर्वाश्रमाभिगमनं सर्वतीर्थावगाहनम्।

न तथा पावनं नृणां श्रीमद्भागवतं यथा।।''

(अर्थात् मनुष्य के लिए सम्पूर्ण पुण्य आश्रमों की यात्रा या सम्पूर्ण तीर्थों में स्नान करना भी वैसा पवित्रकारक नहीं है, जैसा श्रीमद्भागवत् है।)

9. Man's journey from birth to death consists of 4 phases – 1) **Kama** (desire or craving), 2) **Artha** (means to realize kama), 3) **Dharma** (the righteous ways to gain

Kama and Artha), 4) and finally **Moksha** (the liberation, peace and blissor: Ananda). While **Kama** and **Artha** are integral to every living beings man needs Dharma and Moksha as well Mahabharath, the greatest epic ever composed, dwells on the first three aspects of human existence–Kama, Artha and Dharma. And Sreemad Bhagavatham expounds how we can attain Moksha, the Param Purushartha, and the ultimate human attainment.

10. Ignorance is the cause of worldly misery and to dispel ignorance, the light of Jnana (Knowledge) is needed, and for this mere scriptural knowledge is not enough, Jnana (the ultimate knowledge) can be experienced only through deep devotion (Bhakthi) and Bhakthi will eventually lead us from ignorance to Jnana and then on to ultimate liberation or Ananda. This in essence is SreemadBhagavatham. Great sage Veda Vyas tell us this simple truth in the stories of Sree Krishna, The Lord of Guruvayoor.

11. Bhagavatha Sapthaham (the 7 days of Bhaghavatham) recital and discussion by an Acharya has been quite common in almost all temples and even in many Hindu households. Both Sanskrit and Malayalam versions of Bhagavatham are read in Sapthahams. Sankaran Namboothiri's contribution to make Bhagavatha- Sapthahams highly participatory and popular is to be remembered with respect and gratitude, and Malliyoor- Thirumeni, as he is known was the inspiration behind the concept of Bhagavatha Sathram of our time.

12. सन् 300 ई. से सन् 800 ई. तक केरल में संगम युग था जो एक स्वर्णिम काल था। इसी संगम युग में केरल के प्रख्यात सन्त शंकराचार्य जी ने संपूर्ण भारत में चारों दिशाओं में चार मठ स्थापित कर सनातन धर्म को पुनर्स्थापित करने का पुनीत कार्य किया था। फलतः, भारतीय सनातन परंपरा निरंतर चिरंतन रही है। केरल के निवासियों में भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं परम्परा को लेकर अपनी एक अलग ललक है। वे सदैव अपने को ज़मीन से जुड़ा हुआ महसूस करते हैं। यह विरासत अत्यन्त उत्कृष्ट श्रेणी की रही है।

13. हमारी सदियों पुरानी संस्कृति मानव एकता एवं मानव कल्याण पर ही आधारित हैं। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' हमारी मूलभूत अवधारणा है। हमारे दर्शन का प्रमुख सूत्र ही है ''एकोज्यहं बहुस्याम्'' यह सारा चराचर जगत परब्रह्म का ही अंश है। इसलिए शास्त्र हमें यह सिखलाते हैं कि ''क्षिति, जल, पावक, गगन समीरा, पंचतत्व मिल बना शरीरा।'' हम अपने कर्म, ज्ञान और आत्मा, तीनों से इन पंचमहाभूतों के मर्म को समझते हुए भारतीय पद्धति से जीवन जीते हैं और यही हमारी विशेषता है। हमारे धर्मग्रन्थ, हमारी जीवन पद्धति, हमारा सबकुछ पर्यावरण एवं सृष्टि को सहेजने के लिए है।

14. मुझे विश्वास है कि इस भागवत कथा ज्ञान यज्ञ में व्यास पीठ एवं अन्य विद्वानों द्वारा ज्ञानयुक्त उपदेशों का प्रवचन होगा जिसपर सभी उपस्थित साधु जन चिंतन, मनन, मंथन करते हुए अध्यात्मयुक्त भक्ति रस में सराबोर होकर जीवन अमृत का पान करेंगे। यह उपलक्ष्य यहां उपस्थित सभी व्यक्तियों के लिए सहज ही सौभाग्य एवं उनके आत्मोत्थान का समय है। महायोगी कृष्ण का जीवन चरित्र स्वतः ही सामान्य व्यक्ति के समक्ष आए जीवन के रहस्यों एवं उलझनों को बहुत ही आसानी से समझा देती हैं।

15. आज इस महासंगम में प्रख्यात महंत, साधु–संत, भक्तगण, विद्यार्थी, राजनीतिज्ञ के साथ–साथ केरल की हजारों आम जनता उपस्थित हैं एवं श्रीकृष्ण जी के जीवन से एवं महाभारत में कुरूक्षेत्र में दी गई उनकी शिक्षाओं से सभी लाभान्वित होंगे।

16. मानव हमेशा से शांति, सौहार्द एवं प्रेम की खोज में रहा है। हमारी संस्कृति और विरासत का यही मूल मंत्र एवं आधार है जिससे स्वाभाविक रूप से सभी जीवों के प्रति सहनशीलता, अहिंसा, समानता और करुणा का भाव हमारे मन में आता है। हमारा हृदय दया और करुणा से ओत–प्रोत है। शुरू से ही हम सह–अस्तित्व और परस्पर निर्भरता के आधार पर प्रकृति की गोद में पले–बढ़े हैं। मानव ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है और मानवता की राह पर चलना ही मेरी दृष्टि में धार्मिक होना है।

17. जैसा कि सब जानते हैं, भारत विश्व के अनेक धर्मों की जन्मस्थली रहा है। यह इस बात की ओर इशारा करती है कि भारत में धर्म संबंधी चिन्तन, विचारधारा चिरवर्द्धमान, चिरगतिशील रही है। जीवन्तता के प्रति हम कटिबद्ध हैं एवं सभी धर्मों के प्रति सौहार्द भाव भारत की विशेषता है। यही शिक्षा महायोगी श्रीकृष्ण ने ''श्रीमद्भागवतगीता'' माध्यम से दिया है।

18. श्रीमद्भागवदा महासत्रतिल पंगु चेरन्नु श्रीकृष्ण भगवान्डे चरितम् केट, भक्तियुडेयुम ज्ञानत्तिंडेयुम कर्मत्तिंडेयुम मार्गम् स्वीकरिचे नमुक्क नम्मुडे व्यक्ति जीवितवुम् सामुह्या जीवितवुम महत्वरमाकान सादिकट्टे एन्न प्रार्थिकुन्नु।

आइए, श्री मद्भागवत महासत्र में भाग लेकर और भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र का श्रवण करके आप सब ज्ञान, भक्ति और कर्म का मार्ग अपनाकर अपने व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन को उत्कृष्ट बनाएं।

जय श्रीकृष्ण।

————————